तकनीक के साथ बदलता हिन्दी साहित्य

प्रकाश कुमार

शोधार्थी

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग

ति0 मां0 भा0 वि0 वि0, भागलपुर

तकनीकी क्षेत्र में हिन्दी की शक्ति उसकी सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि और तकनीकी विकास में निहित है। हिन्दी बोलने समझने वालों की बड़ी संख्या और मोबाइल फोन, कंप्यूटर, इंटरनेट जैसे सूचना तथा दूरसंचार माध्यमों के साथ उनका बढ़ता जुड़ाव तकनीकी क्षेत्र में हिन्दी के विकास की आदर्श पृष्ठभूमि तैयार कर रहा है। यूनिकोड नामक टेक्स्ट एनकोडिंग के आगमन और लोकप्रियता ने तकनीकी माध्यमों में अधिकांश भाषाओं के प्रयोग से जुड़ी बुनियादी समस्याओं का समाधान कर दिया है। हिन्दी भी इससे लाभान्वित हुई है। इस बीच नए तकनीकी माध्यम, विशेषकर इंटरनेट और स्मार्टफोन, ऐसे लोगों को भी हिन्दी के निकट ला रहे हैं जिनके औपचारिक कामकाज में तो हिन्दी की कोई भूमिका थी ही नहीं, समुचित तकनीकी साधनों के अभाव में अनौपचारिक कामकाज में भी उसके प्रति उदासीन थे।

''सन् 2000 के बाद से हिन्दी के तकनीकी विकास ने गति पकड़ी है। तकनीक की दुनिया में उसकी लोकप्रियता और दर्जा भी बेहतर हुआ है। सबसे बड़ा परिवर्तन यह है कि अब तकनीकी माध्यमों पर हिन्दी का निर्बाध प्रयोग करना संभव है, विशेषकर उन सभी प्लेटफॉर्मों पर, जहाँ यूनिकोड–समर्थन मौजूद है।''[1]

आज जबकि कंपनियों को नए बाजारों की तलाश है और भौगोलिक दूरियां खत्म होती जा रही हैं, तकनीकी उत्पादों को वैश्विक जरूरतों के लिहाज से विकसति किया जा रहा है। यूनिकोड का समर्थन देने से तकनीकी प्लेटफार्मों में बहुभाषीय, बहुलिपीय क्षमता स्वतः आ जाती है। ऐसे में उसका प्रयोग न सिर्फ उपयोक्तओं की जरूरतों के लिहाज से बल्कि कारोबारी आधार पर भी जरूरी हो गया है। इससे लाभ हिन्दी जैसी भाषाओं का हो रहा है।

''विंडोज, मैक और लिनक्स के साथ–साथ एंड्रोइड, आईओएस, विंडोज 8 मोबाइल और ब्लैकबेरी जैसे ऑपरेटिंग सिस्टमों में यूनिकोड हिन्दी का समर्थन मौजूद होने का अर्थ है, हर आमो–खास तक हिन्दी की तकनीकी सक्षमता का पहुँच जाना। उपभोक्ताओं की संख्या बढ़ने पर मांग उठती है और कंपनियों के लिए आकर्षक बाज़ार उभरता है। ऑफिस सुइट्स से लेकर प्रकाशन–ग्राफिक्स स्टूडियो, इंटरनेट खोज से लेकर ई–मेल सेवाओं तक, डेटाबेस से लेकर क्लाउड कंप्यूटिंग, एप्लीकेशन्स से लेकर इंटरफेस (सॉफ्टवेयरों का चेहरा–मोहरा), ब्लॉग से लेकर सोशल नेटवर्किंग, समाचार वेबसाइटों से लेकर साहित्यक कोशों तक हिन्दी का विकास और प्रसार जारी है। ऑनलाइन शब्दकोश, ईबुक्स, विश्वकोश ऑनलाइन पुस्तकें मौजूद हैं। छोटे–छोटे शहरों से ई–पत्रिकाओं की बाढ़ आई हुई है, लगभग सभी अच्छे अखबार और टेलीविजन चैनल इंटरनेट पर मौजूद हैं – समाचार पोर्टलों के रूप में या यूट्यूब चैनलों के रूप में। मोबाइल गैजेट्स पर उनके ऐप्स भी लोकप्रिय हो रहे हैं।''[2]

विकास के और भी कई आयाम हैं। ध्वनि से पाठ, मशीन अनुवाद, ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकगनीशन (ओसीआर), हस्तलिपि पहचान जैसे आधुनिक अनुप्रयोग आ गए हैं। कुछ सफल हैं तो कुछ विकास के दौर में। हिन्दी में टेक्स्ट इनपुट के लिए अनेक किस्मों के कीबोर्ड तथा आईएमई उपलब्ध हैं। मोबाइल गैजेट्स पर भी हिन्दी में लिखन–पढ़ना आसान हो गया है। निष्कर्ष यह कि तकनीकी दृष्टि से हिन्दी के प्रयोग और विकास के संदर्भ में विशेष बाधा शेष नहीं है।

अब इन सुविधाओं और तकनीकी सक्षमताओं के प्रयोग का प्रश्न अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया है। ''कंप्यूटर, स्मार्टफोन और इंटरनेट पर हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है, क्योंकि सुविधा उपलब्ध हो जाने पर लोग उनका थोड़ा–बहुत प्रयोग करने लगते हैं। बहुत से लोग अंग्रजी का प्रयोग इसलिए करते हैं क्योंकि हिन्दी में खुद को अभिव्यक्त करने की सुविधा नहीं थी या फिर वे खुद इसमें तकनीकी लिहाज़ से सक्षम नहीं थे। यह बाधा हट जाने के सकारात्मक परिणाम दिख रहे हैं। हिन्दी में

एसएमएस, ई–मेल, सोशल नेटवर्किंग, इंटरनेट खोज, समाचार वेबसाइटों, यूट्यूब के हिन्दी वीडियो, ब्लॉगों आदि का इस्तेमाल हो रहा है।''[3]

हिन्दी में काम करने के लिए खास किस्म के सॉफ्टवेयर खरीदने की अनिवार्यता खत्म हो जाने से दफ्तरों के कामकाज में भी हिन्दी की स्थिति सुधरी है। जिनके लिए अंग्रेजी में काम करने की अनिवार्यता है, उनके बीच भी तकनीकी युक्तियों पर हिन्दी के प्रति जिज्ञासा पैदा हुई है। यदि वे खुद टाइप नहीं कर सकते तो कॉपी–पेस्ट कर यदा कदा हिन्दी में संदेश भेजने लगे हैं। ''तकनीक ने हिन्दी का प्रचलन और प्रयोग बढ़ाने में योगदान दिया है, खासकर ब्लॉगिंग, सोशल नेटवर्किंग और सोशल मैसेजिंग प्लेटफॉर्मों ने, क्योंकि मित्रों और रिश्तेदारों के साथ अपनी भाषा में बात करने का आनंद ही कुछ और रहता है।''[4]

लेकिन सब कुछ सुखद, सकारात्मक और आदर्श नहीं है। ''हिन्दी में यूनिकोड एनकोडिंग और इनस्क्रिप्ट के जरिए टेक्स्ट इनपुट, भंडारण आदि के क्षेत्र में मानकीकरण सुनिश्चित हो जाना चाहिए था, जो नहीं हो सका।''[5] विभिन्न ऑपरेटिंग सिस्टमों में यूनिकोड में अंकित हिन्दी शब्दों, विशेषकर संयुक्ताक्षर आधारित शब्दों में पूर्ण एकरूपता नहीं है। आईएमई की बाढ़ लगी है जिससे टाइपिंग के बहुत सारे तरीके प्रचलित हो गए हैं, खासकर रोमन में टाइप कर हिन्दी में परिणाम प्राप्त करने की दर्जनों पद्धतियां मौजूद हैं। ''कीबोर्ड हार्डवेयर पर देवनागरी के चिन्ह आज भी अंकित नहीं होते और दस्तावेजों में फॉन्ट कनवर्यन की जरूरत अब तक खत्म नहीं हुई है। यह विविधता हिन्दी की विशेषता या शक्ति नहीं, बल्कि एक समस्या है।''[6] इसका बड़ा कारण मानकीकरण के प्रति आम लोगों के बीच जागरूकता का अभाव है, जिसे बढ़ाने के लिए सरकारों तथा तकनीकी कंपनियों को पहल करने की जरूरत है।

''हिन्दी में वेबसाइटों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है, लेकिन अंग्रेजी वेबसाइटों की तुलना में उनकी संख्या बमुश्किल एक प्रतिशत होगी।''[7]

अनेक कंपनियों ने द्विभाषीय (अंग्रेजी–हिन्दी) वेबसाइटें और एप्लीकेशन विकसित किए हैं। ई–कॉमर्स वेबसाइटें इसमें बढत बनाए हुए हैं। ''सामान्य व्यवसायों को अभी हिन्दीकरण की आवश्यकता महसूस नहीं हो रही, भले ही वे ऐसे उत्पाद और सेवाएं मुहैया कराती हैं जिनका प्रयोग आम हिन्दी–भाषी लोग करते हैं।''[8] भविष्य के लिहाज से सोशल नेटवर्किंग, सोशल मैसेजिंग और मोबाइल गैजेट्स की क्रांति से काफी उम्मीदें हैं। ''अब अपने गैजेट्स में हिन्दी टेक्स्ट को देखना असहज नहीं लगता। यह दिखाता है कि एक बड़ी दीवार ज़रूर टूटी है।''[9] यह सिलसिला बढ़गा ही, ऐसा लगता है। किंतु यह सोचकर तसल्ली कर लेना घातक होगा कि अनुकूल परिस्थितियों के चलते हिन्दी की यह धारा स्वयं गति पकड़ लेगी।

''सन् 2010 के बाद हिन्दी कंटेंट और सुविधाओं के विकास की वृद्धि दर में ठहराव के संकेत थे। हिन्दी को बाहरी उत्प्रेरकों और समर्थन की ज़रूरत है।''[10] हिन्दी में तकनीकी शिक्षा, विविध क्षेत्रों में सस्ते तथा मुफ्त सॉफ्टवेयरों और 'आकाश' जैसे सस्ते हार्डवेयरों के विकास, मानकीकरण सुनिश्चित करने, तकनीकी लेखन को बढ़ावा देने, विविधतापूर्ण कंटेंट तथा देसी तकनीकों के विकास और कारोबारी क्षेत्र के कामकाज में हिन्दी को प्रोत्साहन देने की जरूरत है। ''स्थिति दस साल पहले की तुलना में बेहतर हुई है। अनुकूल कदम उठाए जाने पर वह और भी बेहतर हो सकती है।''[11]

भाषा का आधार उसका साहित्य है जो भाषाई समूह को सांस्कृतिक विरासत और जीवन मूल्यों को संजोता है और उनका विकास और परिष्कार भी करता चलता है। साहित्य को बचाए रखने के लिए जरूरी है कि भाषा सर्वथा नई तकनीक पर आरूढ़ होती चले। मौखिक परंपरा के बाद लेखन और फिर मुद्रण तकनीक को अपनाते हुए ही हिन्दी अपना महत्व, प्रभाव और पहुँच बनाए रख सकी है। अब बारी सायबर माध्यम पर सवार होने की है। आज रोज नई वेबसाईट और ब्लॉग हिन्दी में बन रहे हैं, परंतु उनका प्रभाव और प्रसार कितना है यह आकलन का विषय है। अंग्रेजी हुकूमत ने जब कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना कर हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों का निर्माण कराया तो उसके पीछे उनका मंतव्य हिन्दी की सेवा न होकर जनता पर उनकी भाषा के जरिए प्रभावी ढंग से शासन की क्षमता हासिल करना था। आज एक प्रभावी भाषा के रूप में हिन्दी का स्वरूप हमारे समक्ष है। नया मीडिया इसे नए आकार में गढ़ रहा है। माध्यम और भाषा एक दूसरे के पूरक होने के बावजूद एक दूसरे को बदलते है। नया मीडिया और हिन्दी इसी अन्योन्याश्रिता के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

संदर्भ–सूची :

1. विश्व हिन्दी पत्रिका – 2010 संपादक गंगाधर सिंह सुखलाल पृ0 – 129
2. प्रवासी भारतीयों में हिन्दी की कहानी सुरेन्द्र गंभीर, पृ0 – 230, भारतीय ज्ञानपीठ संस्करण – 2017
3. वही
4. विश्व हिन्दी पत्रिका – 2010 संपादक गंगाधर सिंह सुखलाल पृ0 – 130
5. वही पृ0 – 131
6. प्रवासी भारतीयों में हिन्दी की कहानी, सुरेन्द्र गंभीर, पृ0 – 231, भारतीय ज्ञानपीठ संस्करण – 2017
7. वही
8. साहित्य अमृत, मासिक पत्रिका दिसम्बर 2017 संपादक – त्रिलोकीनाथ चतुवेदी, पृ0 – 53
9. वही
10. प्रवासी भारतीयों में हिन्दी की कहानी सुरेन्द्र गंभीर, पृ0 – 232, भारतीय ज्ञानपीठ संस्करण – 2017
11. वही

Mobile No. : **9471491891**

Emal ID : prakashma1830@gmail.com

नोट – यह शोध पत्र राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाँदा (उ0 प्र0) द्वारा आयोजित राष्ट्री संगोष्ठी (भूमण्डलीय और तकनीकी समय में हिन्दी : चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ) में दिनांक 10–11 फरवरी, 2018 को प्रस्तुत किया जा चुका है। उपर्युक्त संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध पत्र का यह संशोधित रूप है।

****